vinetur

OIV ने अंगूर के मस्ट और वाइन को स्थिर करने के लिए पल्स्ड इलेक्ट्रिक फील्ड्स को मंजूरी दी

चीन में अपनाए गए 16 OIV प्रस्तावों ने किण्वन, परीक्षण और जैव विविधता से जुड़े वैश्विक वाइन मानकों को अद्यतन किया

शनिवार, 14 नवंबर 2026



OIV ने 16 अक्टूबर को यिनचुआन, निंग्शिया में अपनी 24वीं महासभा में 16 प्रस्तावों को मंजूरी दी। इनके तहत अंगूर की खेती, वाइन निर्माण और विश्लेषणात्मक विधियों से जुड़े अंतरराष्ट्रीय नियमों को अद्यतन किया गया और अंगूर के मस्ट तथा वाइन को स्थिर करने की मान्य प्रक्रियाओं में पल्स्ड इलेक्ट्रिक फील्ड्स को शामिल किया गया।

ये फैसले 12 से 16 अक्टूबर तक चीन में आयोजित 47वीं विश्व बेल और वाइन कांग्रेस के दौरान अपनाए गए। इसमें 47 देशों के 600 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें OIV के 42 सदस्य देशों और पांच गैर-सदस्य देशों के प्रतिनिधि शामिल थे। बैठक में 420 वैज्ञानिक प्रस्तुतियां और छह तकनीकी दौरे भी हुए। उम्मीद है कि आने वाले महीनों में प्रस्तुतियां IVES Conference मंच के जरिए ओपन एक्सेस में उपलब्ध कराई जाएंगी।

सबसे उल्लेखनीय बदलावों में दो प्रस्ताव हैं, जिनमें पल्स्ड इलेक्ट्रिक फील्ड्स (PEF) को मस्ट और वाइन के सूक्ष्मजीवी स्थिरीकरण उपचार के रूप में मान्यता दी गई है। यह तकनीक सूक्ष्मजीवी कोशिका झिल्लियों में अपरिवर्तनीय इलेक्ट्रोपोरेशन करके काम करती है, जिससे खराबी पैदा करने वाले सूक्ष्मजीव निष्क्रिय हो जाते हैं। मस्ट में इस उपचार का उद्देश्य अनचाहे सूक्ष्मजीवों को हटाना या कम करना और अवशिष्ट चीनी वाली वाइन बनाने की इच्छा रखने वाले उत्पादकों के लिए अल्कोहलिक किण्वन को तुरंत रोकना है, साथ ही सल्फर डाइऑक्साइड की कम मात्रा का उपयोग करना है। वाइन में इसके घोषित उद्देश्य खराबी पैदा करने वाले सूक्ष्मजीवों को हटाना या कम करना, सल्फर डाइऑक्साइड के बिना मैलोलैक्टिक किण्वन की शुरुआत को टालना या इस किण्वन को रोकना हैं।

पेय उद्योग, खासकर वाइन, अंगूर के रस और वाइन सिरका के साथ काम करने वाले उत्पादकों तथा प्रयोगशालाओं के लिए, ये बदलाव सूक्ष्मजीवी नियंत्रण, उत्पाद स्थिरता और उत्पत्ति की जांच के अहम तकनीकी संदर्भ बन सकते हैं। OIV के मानकों को नियामक, निर्यातक और वाइनरी अक्सर मानक आधार के रूप में इस्तेमाल करते हैं, इसलिए इस तरह के अद्यतन आगे चलकर उत्पादन संबंधी फैसलों, अनुपालन कार्य और व्यापार चर्चाओं को प्रभावित कर सकते हैं।

महासभा ने अंगूर की बेलों की आनुवंशिक विविधता के संरक्षण पर एक प्रस्ताव भी अपनाया। इसमें पुराने अंगूर-बागों में किस्म के भीतर मौजूद विविधता को बचाने की रणनीतियां तय की गई हैं, जहां लंबे समय में संचित आनुवंशिक विविधता के नष्ट होने का जोखिम है। यह उपाय संरक्षण के काम को जलवायु अनुकूलन और भविष्य के चयन कार्यक्रमों से जोड़ता है। इसमें पुराने अंगूर-बागों का सर्वेक्षण करने और पौध सामग्री को इन सीटू तथा एक्स सीटू, दोनों तरीकों से संरक्षित करने का आह्वान किया गया है। संरक्षण से पहले किस्म की पहचान की पुष्टि करनी होगी और यह सुनिश्चित करने के लिए पौध सामग्री की जांच करनी होगी कि उसमें वायरस न हों। प्रस्ताव में दुर्लभ किस्मों को प्राथमिकता देने की बात कही गई है।

कई प्रस्तावों के जरिए अंतरराष्ट्रीय वाइन निर्माण प्रक्रिया संहिता को अद्यतन किया गया। एक प्रस्ताव अल्कोहलिक किण्वन के दौरान झागरोधी एजेंट के रूप में डाइमेथिलपॉलीसिलॉक्सेन (PDMS) के उपयोग की अनुमति देता है, जिसकी अधिकतम मात्रा 10 mg/l है। स्पार्कलिंग वाइन बनाने के लिए निर्धारित वाइन में इस उपचार की अनुमति नहीं है। एक अन्य प्रस्ताव मस्ट के उपचार के लिए फंक्शनलाइज्ड मेसोपोरस सिलिका को शामिल करता है, ताकि अस्थिर प्रोटीनों को चुनिंदा रूप से सोखकर हटाया जा सके। इस उत्पाद को प्रसंस्करण सहायक के रूप में वर्गीकृत किया गया है और इसे टैंक में रुक-रुककर डालना होगा। शुरुआती परीक्षणों के आधार पर इसकी मात्रा 20 से 200 g/hl के दायरे में तय की जानी चाहिए। इस उपचार के बाद बनी वाइन को 0.45 µm या उससे कम छिद्रता वाले फिल्टर से छानना होगा।

OIV ने यीस्ट मैनोप्रोटीन के अनुमत उपयोगों का दायरा भी बढ़ाया। अद्यतन नियम के तहत इनका उपयोग पोटैशियम बाइटार्ट्रेट के अवक्षेपण से स्थिरता बेहतर करने, सफेद और रोज़े वाइन में प्रोटीन स्थिरता मजबूत करने तथा रेड वाइन में रंग की स्थिरता बेहतर करने के लिए किया जा सकता है। इसकी अधिकतम मात्रा 400 mg/l है।

दो अन्य प्रस्तावों में स्टाइरीन-डाइविनाइलबेंजीन अधिशोषक बीड्स से सफेद मस्ट और सफेद वाइन के नए उपचार शामिल हैं। दोनों ही मामलों में तरल को नियंत्रित प्रवाह दर पर बीड्स के एक कॉलम से गुजारा जाता है। इसका उद्देश्य पॉलीफेनोलिक यौगिकों, खासकर हाइड्रॉक्सीसिनेमिक एसिड और ऑक्सीकृत पॉलीफेनोल्स को आंशिक रूप से हटाकर भूरापन आने का जोखिम कम करना है। उपचार से पहले मस्ट या वाइन को साफ करके उसकी टर्बिडिटी 10 NTU या उससे कम करनी होगी।

एक अन्य अद्यतन मैलोलैक्टिक किण्वन के सक्रियक के रूप में इस्तेमाल किए जा सकने वाले उत्पादों का दायरा बढ़ाता है। इसमें पाउडर सेलुलोज को उन सामग्रियों में शामिल किया गया है, जिनमें पहले से माइक्रोक्रिस्टलाइन सेलुलोज और यीस्ट से प्राप्त उत्पाद शामिल थे।

अंतरराष्ट्रीय वाइन निर्माण संहिता को भी संशोधित किया गया। एक नया मोनोग्राफ इमिनोडायएसिटिक फंक्शनल समूह वाले कीलेटिंग स्टाइरीन-डाइविनाइलबेंजीन रेज़िन के विनिर्देश तय करता है। इनका उद्देश्य पुरानी वाइन सिरका में

धातुओं की मात्रा कम करना है। मोनोग्राफ में शुद्धता और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताएं तय की गई हैं, जिनमें सिरका सिम्युलेंट में स्टाइरीन, डाइविनाइलबेंजीन या इमिनोडायएसिटिक एसिड का पता लगाने योग्य स्तर पर भी स्थानांतरण न होना शामिल है। इसमें रेज़िन के पुनर्जनन की सीमा पांच बार तय की गई है। एक अन्य प्रस्ताव साइट्रिक एसिड के मोनोग्राफ को अद्यतन करता है। वाइन को अम्लीकृत करने या आयरन हेज़ का जोखिम सीमित करने के लिए इस्तेमाल होने वाले इस पदार्थ में अब INS 330 के तहत मोनोहाइड्रेट और निर्जल, दोनों रूप शामिल हैं।

विश्लेषण संबंधी बदलावों पर उन परीक्षण प्रयोगशालाओं और उत्पादकों का ध्यान जाने की संभावना है, जिनका जोर ट्रेसबिलिटी पर है। एक प्रस्ताव में अंगूर के रस, पुनर्गठित अंगूर के रस, गाढ़े अंगूर के रस और अंगूर के नेक्टर में कम मात्रा में मौजूद एथेनॉल मापने के लिए एंज़ाइम आधारित विधि जोड़ी गई है। इस विधि से अल्कोहल की मात्रा 0.150% से 3.00% तक मापी जा सकती है। एक अन्य प्रस्ताव वाइन में स्ट्रॉन्शियम आइसोटोप अनुपात तय करने की विधि स्थापित करता है, जो भूवैज्ञानिक उत्पत्ति से जुड़ा संकेतक है। इस प्रक्रिया में उच्च-दाब माइक्रोवेव डाइजेशन, स्ट्रॉन्शियम और रूबिडियम का क्रोमैटोग्राफिक पृथक्करण और क्वाड्रुपोल इंडक्टिवली कपल्ड प्लाज़्मा मास स्पेक्ट्रोमेट्री (Q-ICP-MS) से मापन शामिल है। उत्पत्ति से जुड़े इस तरह के विश्लेषण का महत्व बढ़ सकता है, क्योंकि उत्पादक और नियामक प्रोवेनेंस के दावों की पुष्टि के लिए अधिक मजबूत साधन तलाश रहे हैं।

OIV ने तैयार वाइन में सोर्बिक एसिड की अधिकतम स्वीकार्य मात्रा 200 mg/l तय की। Vitis labrusca और उसके संकरों के लिए यह सीमा 250 mg/l है।

नियामकीय मोर्चे पर, संगठन ने अपने कानूनी ढांचे से पुराने पड़ चुके दस्तावेज हटाने का काम जारी रखा। अर्थशास्त्र और कानून के क्षेत्र में एक प्रस्ताव के तहत 43 ऐसे प्रस्ताव वापस लिए गए, जिन्हें अप्रचलित, पुराना या दोहराव वाला माना गया। OIV ने कहा कि इस कदम का उद्देश्य अपने नियमों में सामंजस्य बेहतर करना और 2025-2029 की रणनीतिक योजना के तहत सदस्य देशों के लिए उनका अनुपालन आसान बनाना है। संगठन के संकलन में 1928 से 2025 के बीच अपनाए गए 1,445 प्रस्ताव शामिल हैं। 2023 में वह पहले ही 376 प्रस्ताव वापस ले चुका था और 2024 में 184 अन्य प्रस्ताव वापस लिए गए।

सुरक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में OIV ने वाइन निर्माण में इस्तेमाल होने वाले टैनिन का वर्गीकरण उनके उपयोग के आधार पर अद्यतन किया। मस्ट में इस्तेमाल किए जाने पर टैनिन को प्रसंस्करण सहायक माना जाता है, क्योंकि तैयार वाइन में वे कोई तकनीकी कार्य नहीं करते। अन्य उद्देश्यों के लिए वाइन में इस्तेमाल किए जाने पर उन्हें योजक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

कुल मिलाकर, 16 अक्टूबर के फैसलों से झाग, अस्थिर प्रोटीन, भूरापन, सूक्ष्मजीवी खराबी और किण्वन नियंत्रण के प्रबंधन के लिए OIV के मान्य साधनों का दायरा बढ़ता है। साथ ही, प्रयोगशाला विधियों को अधिक सटीक बनाया गया है और पुराने नियमों को सुव्यवस्थित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय तकनीकी मानकों पर निर्भर वाइनरी और पेय कारोबारों के लिए सबसे तात्कालिक रुचि संभवतः पल्स्ड इलेक्ट्रिक फील्ड्स, स्थिरीकरण के संशोधित विकल्पों और अल्कोहल मापन तथा भौगोलिक उत्पत्ति से जुड़ी नई विश्लेषणात्मक विधियों पर होगी।